NATIONAL TESTING AGENCY(NTA)

UGC 2025

नेट | सेट | जेआरएफ

संस्कृत

12 वर्ष (2014 - जून 2025)

पिछले वर्ष के प्रश्नों को विस्तृत व्याख्या के साथ हल किया गया

पेपर-2

IfAS | IFAS Publications

Copyright 2025, IFAS Publications

All rights reserved. No part of this publication or the information contained herein may be reproduced, adapted, abridged, translated, stored in a retrieval system, computer system, photographic or other systems or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, optical, digital, by photocopying, recording or otherwise, without written prior permission from the publisher. Any breach will attract legal action and prosecution without further notice.

Disclaimer: While every effort has been made to avoid errors and omissions, this publication is being sold and marketed on the understanding and presumption that neither the editors (or authors) nor the publishers nor the printers would be liable in any manner whatsoever, to any person either for an error or for an omission in this publication, or for any action to be taken on the basis of this work. Any inadvertent discrepancy noted may be brought to the attention of the publisher, for rectifying it in future editions, if published.

This book contains information obtained from authentic and highly regarded sources. Reasonable efforts have been made to publish reliable data and information, but the editors and publisher cannot assume responsibility for the validity of all materials or the consequences of their use. The editors and publisher have attempted to trace and acknowledge the copyright holders of all material reproduced in this publication and apologize to copyright holders if permission and acknowledgement to publish in this form have not been obtained. If any copyright material has not been acknowledged please write and let us know so that we may rectify it.

Trademark Notice: Publications or corporate names may be trademarks, and are used only for identification and explanation in bonafide intent without intent to infringe.

Designed and Published by:
IFAS Publications

Address:
Shivranjan Complex,
Someshwar Wadi, Near
Rajwada Hotel, Baner Road,
Pune 411 008.

Contact No.: +91-705 86 73 157

Website: https://ifasonline.com

Price: ₹ 895.00

ISBN: 978-81-990285-1-7

भूमिका

हमें अत्यंत हर्ष है कि हम आपके समक्ष **यूजीसी-नेट संस्कृत** परीक्षा की वस्तुनिष्ठ पुस्तक प्रस्तुत कर रहे हैं, जो पिछले **12 वर्षों** के यूजीसी-नेट संस्कृत के प्रश्नों का विस्तृत समाधान प्रस्तुत करने वाली अध्ययन-सामग्री का संकलन है। यह पुस्तक उन अभ्यर्थियों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई है जो यूजीसी-नेट संस्कृत परीक्षा में **जेआरएफ (JRF) या सहायक प्राध्यापक (Assistant Professorship)** के लिए सफलता प्राप्त करने का लक्ष्य रखते हैं।

यूजीसी-नेट संस्कृत परीक्षा में **संस्कृत साहित्य, दर्शन, भाषा-विज्ञान, व्याकरण, संस्कृत काव्यशास्त्र, वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, पुराण, और अन्य प्राचीन ग्रंथों** का गहन अध्ययन आवश्यक होता है। इस पुस्तक में पिछले 12 वर्षों के यूजीसी-नेट संस्कृत परीक्षा प्रश्नों को संकलित किया गया है, जिससे परीक्षार्थी परीक्षा के प्रश्न-पैटर्न तथा प्रश्नों के स्तर को समझ सकें।

<u>पुस्तक की मुख्य विशेषताएँ:</u>

- **12 वर्षों के हल प्रश्नपत्र:** पिछले दिसम्बर 2014 से जनवरी 2025 तक के यूजीसी-नेट संस्कृत परीक्षा प्रश्नों को शामिल किया गया है, जिससे छात्र परीक्षा के प्रश्न-पैटर्न तथा प्रश्नों के स्तर को समझ सकें।
- **विस्तृत समाधान:** प्रत्येक प्रश्न के साथ उसका विस्तृत समाधान दिया गया है, जिसमें संबंधित संस्कृत साहित्यिक, भाषिक तथा व्याकरणिक अवधारणाओं (Concepts) की गहराई से व्याख्या की गई है। यह न केवल सही उत्तर की व्याख्या करता है, बल्कि विषय की समझ और विश्लेषणात्मक क्षमता को भी मजबूत बनाता है।

यह पुस्तक केवल प्रश्नों के अभ्यास का माध्यम ही नहीं है, बल्कि यह संस्कृत साहित्य, दर्शन, वेद, उपनिषद, संस्कृत काव्यशास्त्र और संस्कृत साहित्य के विभिन्न अंगों के अध्ययन में भी ठोस नींव तैयार करने में सहायक होगी। इस संरचित पद्धति से विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास होगा, जो इस परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आपकी यूजीसी-नेट संस्कृत परीक्षा की तैयारी में एक अनिवार्य साधन सिद्ध होगी और आपकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। निरंतर अध्ययन और नियमित अभ्यास से आप परीक्षा की सभी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए पूर्णतः तैयार होंगे।

✨ आपकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ! ✨

UGC NET परीक्षा पैटर्न

पेपर	पेपर 1	पेपर 2
विषय	सामान्य	संस्कृत
प्रश्नों की संख्या	50	100
कुल अंक	100	200
समय अवधि	3 घंटे	
परीक्षा का माध्यम	ऑनलाइन	
निगेटिव मार्किंग	गलत उत्तर के लिए नंबर नहीं काटे जाएंगे।	

Cut Off

वर्ष	**कैटेगरी**	**सामान्य**	**ओबीसी**	**ईडब्लूएस**	**एससी**	**एसटी**	**पीडब्ल्यूडी**
2025 JUNE	सहायक प्राध्यापक	198	178	178	170	160	158
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	224	212	218	204	196	178
2024 DEC	सहायक प्राध्यापक	176	160	162	154	142	134
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	202	188	196	176	172	156
2024 JUNE	सहायक प्राध्यापक	180	160	164	150	138	136
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	204	192	198	180	180	172
2023 DEC	सहायक प्राध्यापक	174	154	158	148	132	150
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	196	186	190	178	162	174
2023 JUNE	सहायक प्राध्यापक	190	172	174	164	146	144
	जेआरएफ & सहायक प्राध्यापक	212	200	204	188	182	188

Syllabus

इकाई-I
वैदिक-साहित्य

(क) वैदिक-साहित्य का सामान्य परिचय:-

1.1 वेदों का काल: मैक्समूलर, ए. वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम. विन्टरनिज, भारतीय परम्परागत विचार

1.2 संहिता साहित्य

1.3 संवाद सूक्त: पुरुरवा-उर्वशी, यम-यमी, सरमा-पणि, विश्वामित्र- नदी

1.4 ब्राह्मण साहित्य

1.5 आरण्यक साहित्य

इकाई-II

(ख) वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन:-

2.1. निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन:-

- **ऋग्वेदः** अग्नि (1.1), वरुण (1.25), सूर्य (1.125), इन्द्र (2.12), उषस् (3.61), पर्जन्य (5.83), अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पुरुष (10.90), हिरण्यगर्भ (10.121), वाक् (10.125), नासदीय (10.129)
- **शुक्लयजुर्वेदः** शिवसंकल्प, अध्याय 34 (1-6),
  प्रजापति, अध्याय 23 (1-5)
- **अथर्ववेदः** राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (10.53), पृथिवी (12.1)

2.2. ब्राह्मण-साहित्य: प्रतिपाद्य विषय, विधि एवं उसके प्रकार, अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास यज्ञ, पंचमहायज्ञ, आख्यान (शुनःशेप, वाङ्ङ्मनस्)।

2.3. उपनिषद्-साहित्य: निम्नलिखित उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन: ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर ।

2.4. वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति:

- ऋक्प्रातिशाख्य: निम्नलिखित परिभाषाएँ - समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिफित ।
- निरुक्त (अध्याय 1 तथा 2)
  चार पद कोटियाँ, नाम विचार, आख्यात विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपात की
- निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन
- निर्वचन के सिद्धान्त
- निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति: आचार्य, बीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु।

- निरुक्त (अध्याय 7 दैवत काण्ड)
- वैदिक स्वर: उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित।
- वैदिक व्याख्या पद्धति: प्राचीन एवं अर्वाचीन

इकाई-III
दर्शन-साहित्य

(क) प्रमुख भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचय:

प्रमाणमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा

(चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा के संदर्भ में)

3.1 प्रमाणमीमांसा,

3.2 तत्त्वमीमांसा,

3.3 आचारमीमांसा

इकाई-IV

(ख) दर्शन-साहित्य का विशिष्ट अध्ययन:

4.1 ईश्वरकृष्ण; सांख्यकारिका सत्कार्यवाद, पुरुषस्वरूप, प्रकृतिस्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य।

4.2 सदानन्दः वेदान्तसार अनुबन्ध-चतुष्ट्य, अज्ञान, अध्यारोप-अपवाद, लिंगशरीरोत्पात्ति, पंचीकरण, विवर्त, महावाक्य, जीवन्मुक्ति।

4.3 अन्नंभट्टः तर्कसंग्रह / केशव मिश्रः तर्कभाषा: पदार्थ, कारण, प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द), प्रामाण्यवाद, प्रमेय।

4.4 लौगाक्षिभास्कर; अर्थसंग्रह

4.5 पतंजलि: योगसूत्र, (व्यासभाष्य): चित्तभूमि, चित्तवृत्तियाँ, ईश्वर का स्वरूप, योगाङ्ग, समाधि, कैवल्य।

4.6 बादरायण; ब्रह्मसूत्र 1.1 (शांकरभाष्य)

4.7 विश्वनाथपंचाननः न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)

4.8 सर्वदर्शनसंग्रहः जैनमत, बौद्धमत

इकाई-V
व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

(क) सामान्य-परिचय: निम्नलिखित आचार्यों का परिचय -

5.1 पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, वामनजयादित्य, भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट, जैनेन्द्र, कैय्यट, शाकटायन, हेमचन्द्रसूरि, सारस्वतव्याकरणकार।

5.2 पाणिनीय शिक्षा

5.3 भाषाविज्ञान:

- भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों का वर्गीकरण: स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर (संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में), मानवीय ध्वनियंत्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण,
- ध्वनि नियम (ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर)
- अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण,
- वाक्य का लक्षण व भेद,
- भारोपीय **(Indo-European)** परिवार का सामान्य परिचय,
- वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर,
- भाषा तथा वाक् में अन्तर,
- भाषा तथा बोली में अन्तर

इकाई-VI

(ख) व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन:

6.1 परिभाषाएँ - संहिता, संयोग, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी, घि, उपधा, अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, भ, सर्वनाम, निष्ठा।

6.2 सन्धि - अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

6.3 सुबन्त - अजन्त - राम, सर्व (तीनों लिंगों में), विश्वषा, हरि, त्रि (तीनों लिंगों में),
सखि, सुधी, गुरु, पितृ, गौ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, ज्ञान, बारि, मधु।
हलन्त - लिहू, विश्ववाहू, चतुर् (तीनों लिंगों में), इदम् (तीनों लिंगों में), किम् (तीनों लिंगों में), तत् (तीनों लिंगों में), राजन्, मघवन्, पथिन्, विद्वम्, अस्मद्, युष्मद्

6.4 समास - अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द्व, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

6.5 तद्धित - अपत्यार्थक एवं मत्वर्थीय (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

6.6 तिङन्त - भू, एध्, अद्, अस्, हु, दिव्, षुञ्, तुद्, तन्, कृ, रुध्, क्रीञ्, चुर् ।

6.7 प्रत्ययान्त - णिजन्तः सन्नन्तः यङन्तः यङ्लुगन्तः नामधातु।

6.8 कृदन्त - तव्य / तव्यत्; अनीयर्; यत्: ण्यत्; क्यप् शतृः शानच्: क्त्वा क्तः क्तवतुः तुमुन्: णमुल्।

6.9 स्त्रीप्रत्यय - लघुसिद्धान्त कौमुदी के अनुसार

6.10 कारक प्रकरण - सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

6.11 परस्मैपद एवं आत्मनेपद विधान- सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

6.12 महाभाष्य (पस्पशाह्निक) - शब्दपरिभाषा, शब्द एवं अर्थ संबंध, व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण पद्धति।

6.13 वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) - स्फोट का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ, स्फोट एवं ध्वनि का संबंध, शब्द-अर्थ संबंध, ध्वनि के प्रकार, भाषा के स्तर।

इकाई-VII

संस्कृत-साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय :

(क) निम्नलिखित का सामान्य परिचय:

7.1 भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ, हर्ष, बाणभट्ट, दण्डी, भवभूति, भट्टनारायण, बिल्हण, श्रीहर्ष, अम्बिकादत्तव्यास, पंडिता क्षमाराव, वी. राघवन्, श्रीधरभास्कर वर्णेकर ।

7.2 काव्यशास्त्र - रससम्प्रदाय, अलंकारसम्प्रदाय, रीतिसम्प्रदाय, ध्वनिसम्प्रदाय, व्रकोक्तिसम्प्रदाय, औचित्यसम्प्रदाय ।

7.3 पाश्चात्य काव्यशास्त्र - अरस्तू, लॉन्जाइनस, क्रोचे ।

इकाई-VIII

(ख) निम्नलिखित का विशिष्ट अध्ययन:

8.1 **पद्य**: बुद्धचरितम् (प्रथम) रघुवंशम् (प्रथमसर्ग), किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग), शिशुपालवधम्, (प्रथमसर्ग), नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)

8.2 **नाट्य**: स्वप्नवासवदत्तम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्, मुद्राराक्षसम्, उत्तररामचरितम्, रत्नावली, मृच्छकटिकम्।

8.3 **गद्य**: दशकुमारचरितम् (अष्टम-उच्छवास), हर्षचरितम् (पञ्चम-उच्छवास), कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

8.4 **चम्पूकाव्य**: नलचम्पूः (प्रथम उच्छवास)

8.5 **साहित्यदर्पणः** काव्यपरिभाषा, काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन, शब्दशक्ति - (संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), काव्यभेद (चतुर्व परिच्छेद) श्रव्यकाव्य (गद्य, पद्य, मित्र काव्य-लक्षण)

8.6 **काव्यप्रकाशः** शब्दशक्ति, काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्र विमर्श, रसदोष, काव्यगुण, व्यंजनावृत्ति की स्थापना (पञ्चम उल्लास)

8.7 **अंलकारः** वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, क्षेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपहनुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, सकंर, संसृष्टि।

8.8 **ध्वन्यालोकः (प्रथम उद्योत)**

8.9 **वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)**

8.10 **भरत-नाट्यशास्त्रम् (द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय)**

8.11 **दशरूपकम् (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)**

8.12 **छन्द परिचय -** आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, बसन्ततिलका, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, शालिनी, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

इकाई-IX
पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

(क) निम्नलिखित का सामान्य परिचयः

9.1 रामायण - विषयवस्तु, काल, रामायणकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, रामायण में आख्यान

9.2 महाभारत - विषयवस्तु, काल महाभारतकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, महाभारत में आख्यान।

9.3 पुराण: पुराण की परिभाषा, महापुराण उपपुराण, पौराणिक सृष्टि-विज्ञान, पौराणिक आख्यान।

9.4 प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय।

9.5 अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय।

9.6 लिपि: ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त।

9.7 अभिलेख का सामान्य परिचय

इकाई-X

(ख) निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

10.1 कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (प्रथम-विनयाधिकारिक)

10.2 मनुस्मृतिः (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)

10.3 याज्ञवल्क्यस्मृतिः (व्यवहाराध्याय)

10.4 लिपि तथा अभिलेख -

- गुप्तकालीन तथा अशोककालीन ब्राह्मी लिपि।
- अशोक के अभिलेख प्रमुख शिलालेख, प्रमुख स्तम्भलेख
- मौर्योत्तरकालीन अभिलेख - कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख, रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
- गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख, यशोधर्मन् का मन्दसौर शिलालेख, हर्ष का बांसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख, पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल शिलालेख

INDEX

UGC NET – SANSKRIT

UNIT NO.	UNIT NAME	PAGE NO.
1	2025 JUNE EXAM PAPER	1
2	2024 DEC. EXAM PAPER	23
3	2024 AUG. EXAM PAPER	44
4	2023 DEC. EXAM PAPER	66
5	2023 JUNE EXAM PAPER	89
6	2022 OCT. EXAM PAPER	108
7	2021 DEC. EXAM PAPER	132
8	2020 SEP. EXAM PAPER	153
9	2019 DEC. EXAM PAPER	175
10	2019 JUNE EXAM PAPER	198
11	2018 DEC. EXAM PAPER	218
12	2018 JULY EXAM PAPER	242
13	2017 NOV. EXAM PAPER	265
14	2017 JAN. EXAM PAPER	292
15	2016 DEC. EXAM PAPER	319
16	2016 JULY EXAM PAPER	346
17	2015 JUNE EXAM PAPER	373
18	2014 DEC. EXAM PAPER	399

JUNE

2025

UGC NET SANSKRIT

QUESTIONS WITH SOLUTION

1. प्रथमसूच्या सह द्वितीयसूची सुमेलयत-

List-I	List-II
A. हिरण्यगर्भः	I. वेदनावः समुद्रियः
B. इन्द्रः	II. यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः
C. वरुणः	III. यो अन्तरिक्ष विममे वरीयः
D. अग्निः	IV. वर्धमानं स्वे दमे

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(1) A-I B-II, C-III, D-IV (2) A-II, B-III, C-I, D-IV
(3) A-II, B-III, C-IV, D-I (4) A-IV, B-III, C-II, D-I

2. अर्थसङ्ग्रहानुसारम् अधस्तनाः वेदविधाः यथाक्रमं लेखनीयाः -

(A) अर्थवादः
(B) मन्त्रः
(C) निषेधः
(D) नामधेयः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B, C, D (2) D, C, B, A
(3) A, D, C, B (4) B, D, C, A

3. योगदर्शनस्य प्रथमः उपदेष्टा कः?

(1) पतञ्जलिः (2) रामदेवः
(3) वाचस्पतिमिश्रः (4) कपिलमुनिः

4. तर्कसङ्ग्रहानुसार "कारणं त्रिविधं समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात्" । समवायिकारणस्य असमवायिकारणस्य च क्रमानुसार उदाहरणं चिनुत-

(A) तन्तकः पटस्य, पटश्च स्वगतरूपादेः
(B) घटाभाववद् भूतलम्
(C) वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वतः
(D) तन्तुसंयोगः पटस्य, तन्तुरूपं पटरूपस्य

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B केवलम् (2) A, D केवलम्
(3) B, C केवलम् (4) B, D केवलम्

5. प्रथमसूच्या सह द्वितीयसूचीं सुमेलयत-

List I	List II
A. बादरायणः	I. तत्त्ववेशारदी टीका
B. वाचस्पतिमिश्रः	II. राजमार्तण्डवृत्तिः
C. भोजः	III. योगसूत्रभाष्यम्
D. विज्ञानभिक्षुः	IV. योगवार्तिकम्

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(1) A-IV, B-III, C-II, D-I (2) A-II, B-III, C-I, D-IV
(3) A-III, B-I, C-II, D-IV (4) A-I, B-II, C-III, D-IV

6. अधोलिखितेषु "यो कुत्सितं बहु भाषेते" तो वर्तेते-

(A) वाग्मी
(B) वाचालः
(C) वाचाटः
(D) वातकी

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, D केवलम् (2) B, C केवलम्
(3) C, D केवलम् (4) A, C केवलम्

7. 'विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मे शेवधिष्टेऽहमस्मि' इत्यंशो कुत्र समुद्धृतः?

(1) निरुक्ते (2) शिवसङ्कल्पसूक्ते
(3) वाक्सूक्ते (4) प्रजापतिसूक्ते

8. जगती-छन्दसा सम्बद्धविषयौ स्तः -

(A) अष्टचत्वारिंशद्वर्णाः
(B) जलचरगतिः
(C) अतिच्छन्दः
(D) चत्वारिंशद्वर्णाः

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B केवलम् (2) A, C केवलम्
(3) B, C केवलम् (4) A, D केवलम्

9. प्रथमसूच्या सह द्वितीयसूची सुमेलयत

List I	List II
A. इन्द्रः	I. धृतव्रतः
B. अद्रिः	II. बृहत्साम
C. आदित्यः	III. रथन्तर साम
D. वरुणः	IV. वैरूपं साम

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(1) A-I B-II C-III D-IV (2) A-II B- III C-IV D-I
(3) A-II B-I C-IV D-III (4) A-III B-I C-IV, D-II

10. अधोलिखितेषु भवभूतेः प्रसिद्धम् उपाधिद्वयं विद्यते -

(A) मृगराजः
(B) कविमृगेन्द्रः
(C) वश्यवाक्
(D) परिणतप्रज्ञः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, C केवलम् (2) C, D केवलम्
(3) B, C केवलम् (4) A, B केवलम्

11. अधोलिखितानि आचार्याणां नामानि कालक्रमानुसारं चेतव्यानि-

(A) भट्टोजिदीक्षितः
(B) कैय्यटः
(C) भर्तृहरिः
(D) वामनजयादित्यौ

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B, C, D (2) C, D, B, A
(3) D, A, C, B (4) B, C, A, D

12. न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां कति पदार्थाः निरूपिताः सन्ति?

(1) त्रयः (2) पञ्च
(3) सप्त (4) नव

13. साङ्ख्यकारिकानुसारं प्रत्ययसर्गस्यावान्तरभेदौ चिनुत-

(A) विपर्ययः, शक्तिः
(B) विपर्ययः, अशक्तिः
(C) तुष्टिः, सिद्धिः
(D) अतुष्टिः, सिद्धिः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B केवलम् (2) B, D केवलम्
(3) B, C केवलम् (4) A. D केवलम्

14. ब्राह्मीलिपेः विकसिते लिपी स्तः -

(A) गुप्तलिपिः **(B)** शारदालिपिः
(C) खरोष्ठीलिपिः **(D)** चीनीलिपिः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) B, C केवलम् (2) A, C केवलम्
(3) A, B केवलम् (4) D, C केवलम्

15. प्रथमसूच्या सह द्वितीयसूचीं सुमेलयत-

List-I	List-II
A. जेगीयते	I. णिजन्तरूपम्
B. निद्रापयति	II. यङन्तरूपम्
C. दिदृक्षते	III. नामधातुरूपम्
D. कलहायते	IV. सन्नन्तरूपम्

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(1) A-IV, B-II, C-III, D-I (2) A-II, B-I, C-IV, D-III
(3) A-II, B-IV, C-I, D-III (4) A-III, B-II, C-IV, D-I

16. अधोलिखितेषु सात्त्विकपुराणद्वयं चेतव्यम् -

(A) शिवपुराणम्
(B) भागवतपुराणम्
(C) कालिकापुराणम्
(D) विष्णुपुराणम्

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B केवलम् (2) B. D केवलम्
(3) C, D केवलम् (4) A, D केवलम्

17. अधोलिखितेषु अनुबन्धचतुष्टयेषु कौ परिगणितौ -

(A) अधिकारी
(B) ब्रह्म
(C) विषयः
(D) जीवः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B केवलम् (2) B, D केवलम्
(3) A, C केवलम् (4) C, D केवलम्

18. अधोलिखितेषु स्त्रीलिङ्गे शतृप्रत्ययान्तं पदद्वयम् अस्ति-

(A) पिबती
(B) सती
(C) दधन्ती
(D) जाग्रती

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B केवलम् (2) B, C केवलम्
(3) B, D केवलम् (4) A, C केवलम्

19. अधोलिखितानां शब्दप्रवृत्तीनां यथाशास्त्रक्रमं समुपस्थापयत-

(A) डित्थः
(B) शुक्लः
(C) गोः
(D) चलः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B, C, D (2) B, A, C, D
(3) D, C, B, A (4) C, B, D, A

20. प्रथमसूच्या सह द्वितीयसूचीं सुमेलयत-

List I	List II
A. पण्डिता-क्षमारावः-	I. गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्
B. वेंकटराम-राघवन्	II. शिवराज्योदयः
C.अम्बिकादत्त-व्यासः	III. स्वराजविजयम्
D. श्रीधरभास्कर-वर्णकर	IV. अभिनवसुन्दरी

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(1) A-II, B-I, C-IV, D-III (2) A-III, B-IV, C-I, D-II
(3) A-IV, B-II, C-III, D-I (4) A-I, B-III, C-II, D-IV

21. भक्त्या ध्वनेः एकत्वं नास्ति-

(1) अर्थभेदात् (2) शब्दभेदात्
(3) रूपभेदात् (4) सम्बन्धभेदात्

22. अधस्तनेषु उपपुराणमस्ति-

(1) नारदपुराणम् (2) गरुडपुराणम्
(3) कालिकापुराणम् (4) वामनपुराणम्

23. ऋग्वेदस्य अधोलिखितानि सूक्तानि यथाक्रमं चिनुत -

(A) पुरुरवा-उर्वशी-संवादसूक्तम्
(B) सरमा-पणि-संवादसूक्तम्
(C) विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्तम्
(D) यम-यमी-संवादसूक्तम्

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B, C, D (2) C, D, A, B
(3) C, B, D, A (4) D, C, A, B

24. धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् ॥ इत्यनेन कस्य ग्रन्थस्य परिचयः प्राप्यते?

(1) रामायणस्य (2) मनुस्मृतेः
(3) महाभारतस्य (4) श्रीमद्भागवतस्य

25. "कमलेव मतिः मतिरिव कमला तनुरिव विभा विभेव तनुः । धरणीव धृतिधृतिरिव धरणी सततं विभाति बत यस्य ॥" इत्यत्र कोऽलङ्कारः?

(1) अनन्वयः (2) उत्प्रेक्षा
(3) उपमेयोपमा (4) मालोपमा

26. अधोलिखितेषु उषसो विशेषणे न स्तः -

(A) ऋतावरी **(B)** राष्टी
(C) चिकितुषी **(D)** रेवती

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B केवलम् (2) B, D केवलम्
(3) B, C केवलम् (4) A, C केवलम्

27. अधोलिखितेषु कौ शब्दौ पुंल्लिङ्गे स्तः?

(A) विश्वपाः
(B) मधु
(C) वारि
(D) मघवा

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B केवलम् (2) B, C केवलम्
(3) A, D केवलम् (4) C, D केवलम्

28. प्रथमसूच्या सह द्वितीयसूचीं सुमेलयत-

List-I	List-II
A. आख्यातोपयोगे	I. वृक्षमवचिनोति फलानि
B. जनिकर्तुः प्रकृतिः	II. यागाय याति
C. अकथितं च	III. उपाध्यायात् अधीत
D. तुमर्थाच्च भाववचनात्	IV. ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्त

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पं चिनुत-

(1) A-III, B-IV, C-I, D-II (2) A-II, B-III, C-IV, D-I
(3) A-I, B-IV, C-II, D-III (4) A-IV, B-I, C-III, D-II

29. अधोलिखितेषु यजुर्वेदीयम् आरण्यकं नाऽस्ति-

(1) बृहदारण्यकम् (2) तैत्तरीयारण्यकम्
(3) मैत्रायणीयारण्यकम् (4) शाङ्खायनारण्यकम्

30. अधोलिखितासु श्लिष्ट-योगात्मक-भाषासु का परिगणिता न भवति?

(1) लेटिन-भाषा (2) तुर्की-भाषा
(3) ग्रीक-भाषा (4) रूसी-भाषा

31. अधोलिखितसम्प्रदायान् कालक्रमानुसारं समुपस्थापयत-

(A) ध्वनिसम्प्रदायः
(B) वक्रोक्तिसम्प्रदायः
(C) अलङ्कारसम्प्रदायः
(D) रससम्प्रदायः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(1) A, B, D, C (2) D, C, A, B
(3) A, B, C, D (4) C, D, A, B

32. प्रद्वेषो बहुमानी वा सङ्कल्पादुपजायते । भर्तृदाराभिलाषित्वादस्यां में महती स्वता ॥ इति उक्तिः?

(1) वासवदत्तायाः (2) पद्मावत्याः
(3) योगन्धरायणश्य (4) ब्रह्माचारिणः

96. उपरिलिखितपरिच्छेदे समुल्लिखितस्य पुण्यश्लोकः" इति पदस्य अर्थो वर्तते -
(1) परमपटुः (2) पवित्रकीर्तिः
(3) सत्यवादी (4) विनीतः

97. उपरिलिखितपरिच्छेदे वर्णितः मन्त्री वसुरक्षितः केन सम्मानितः आसीत्?
(1) अनन्तवर्मणा (2) महामात्येन
(3) पुण्यवर्मणा (4) मन्त्रिपरिषदा

98. उपरिलिखितपरिच्छेदानुसारं दिव्यं चक्षुः किमस्ति?
(1) कोषः (2) शास्त्रम्
(3) प्रजानां योगक्षेमः (4) सैन्यबलम्

99. उपरिलिखितपरिच्छेदानुसारं वसुरक्षितः कां विद्यामपहातुमुपदिशति?
(1) कुलविद्याम् (2) नृत्यविद्याम्
(3) दण्डनीतिविद्याम् (4) बाह्यविद्याम्

100. उपरिलिखितपरिच्छेदानुसारं पुण्यवर्मा कीदृशमायुः प्राप्तवान्?
(1) पूर्णमायुः (2) अल्पायुः
(3) मध्यमायुः (4) मध्यमोत्तमायुः

उत्तर कुंजी									
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**
(2)	(4)	(1)	(2)	(3)	(2)	(1)	(2)	(2)	(2)
11	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
(2)	(3)	(3)	(3)	(2)	(2)	(3)	(3)	(4)	(2)
21	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**
(3)	(3)	(2)	(3)	(3)	(3)	(3)	(1)	(4)	(2)
31	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
(2)	(3)	(3)	(1)	(2)	(3)	(4)	(3)	(2)	(4)
41	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**
(4)	(1)	(4)	(4)	(2)	(3)	(1)	(1)	(1)	(4)
51	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
(2)	(2)	(2)	(1)	(2)	(4)	(2)	(3)	(3)	(3)
61	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**
(2)	(3)	(1)	(4)	(2)	(1)	(1)	(1)	(4)	(2)
71	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
(2)	(2)	(3)	(1)	(1)	(1)	(1)	(4)	(1)	(1)
81	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**
(3)	(2)	(3)	(1)	(3)	(1)	(3)	(3)	(4)	(1)
91	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
(3)	(2)	(1)	(4)	(3)	(2)	(3)	(2)	(3)	(1)

उत्तर

1. उत्तर (2):
व्याख्या: समीकरण के अनुसार, हर सूची के विवरण को देखा जाए तो:
1. हिरण्यगर्भः: यह वैदिक विचार में ब्रह्मा या सृष्टि के रचनाकार को सूचित करता है, जो "II. यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः" के साथ मेल खाता है, जो अंतरिक्ष में फैलनेवाले रजस के रूप में व्याख्यायित होता है।
2. इन्द्रः: इन्द्र का संबंध "III. यो अन्तरिक्ष विममे वरीयः" से है, क्योंकि इन्द्र का स्वरूप युद्ध और आकाश में बर्फ या मेघों की गतिविधियों से जुड़ा हुआ होता है।
3. वरुणः: वरुण का कार्य "IV. वर्धमानं स्वे दमे" के रूप में व्यक्त किया गया है, जो उनके अधिपत्य क्षेत्र और क्षेत्रीय नियंत्रण का संकेत करता है।
4. अग्निः: अग्नि का संबंध "I. वेदनावः समुद्रियः" से है, क्योंकि अग्नि समुद्रों के गहरे या जलमय रूप से जुड़ी हुई होती है, और वह ज्वाला के रूप में जल में प्रकट होती है।

2. उत्तर (4):
व्याख्या: मन्त्रः सर्वप्रथम आरंभिक प्रक्रिया निर्वाहयति, तदनन्तर नामधेयः वस्तूनां परिचयं दत्ते, निषेधः अनुशासनं प्रस्तुत्य अर्थवादः तस्य अर्थसम्प्रदायं स्पष्टयति।
अर्थसङ्ग्रहानुसारम् वेदविधाः यथाक्रमं इस प्रकार होंगे:
B. मन्त्रः: मंत्र वेदों के मूल होते हैं, जो सबसे पहले आते हैं।
A. अर्थवादः: अर्थवाद वेदों के संदेश या उनके अर्थ की व्याख्या करते हैं।
C. निषेधः: निषेध वह है, जो यह बताता है कि क्या नहीं करना चाहिए।
D. नामधेयः: नामधेय वह शाब्दिक विशेषताएँ होती हैं, जो वस्तु या व्यक्ति का नाम बताती हैं।

3. उत्तर (1):
व्याख्या: पतञ्जलि योगसूत्रेण योगदर्शनस्य मार्गदर्शनं कृतवान्। तेन मानसिक शान्ति च शारीरिक स्वास्थ्यं साधनायां योगप्रणालीं निरूपितं।
पतञ्जलि ने योगसूत्र नामक ग्रंथ के माध्यम से योगदर्शन का मार्गदर्शन किया। उन्होंने योग को मानसिक शांति, आत्मनियंत्रण और आत्मज्ञान की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया। उनका उद्देश्य शरीर और मन के संतुलन के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति था। पतञ्जलि द्वारा प्रतिपादित योगप्रणाली आज भी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

4. उत्तर (2):

व्याख्या:समवायिकारणं तद्रूपेण विशिष्टं कारणं यथा तन्तुसंयोगः पटस्य, असमवायिकारणं तद्व्यतिरिक्तं यथा घटाभाववद्भूतलम्। अत्र विकल्पे A, D समुचितं कारणं दर्शयन्ति।

समवायिकारण वह कारण है जो वस्तु के रूप में स्वयं में व्याप्त होता है, जैसे तन्तुसंयोगः पटस्य। असमवायिकारण वह कारण है जो किसी वस्तु से बाहर होता है, जैसे घटाभाववद्भूतलम्। यहाँ, तन्तुसंयोगः पटस्य और घटाभाववद्भूतलम् सही उदाहरण हैं। इसलिए विकल्प A, D सही हैं।

5. उत्तर (3):

व्याख्या:

1. बादरायणः: उन्हें योगसूत्रभाष्यम् (III) के साथ जोड़ा जाता है, क्योंकि वे योगसूत्र के मुख्य व्याख्याता हैं।
2. वाचस्पतिमिश्रः: उन्हें तत्त्ववैशारदी टीका (I) से जोड़ा जाता है, क्योंकि उन्होंने वेदांत के सूत्रों पर टीका लिखी थी।
3. भोजः: उन्हें राजमार्तण्डवृत्तिः (II) से जोड़ा जाता है, जो एक प्रसिद्ध संस्कृत व्याख्यान ग्रंथ है।
4. विज्ञानभिक्षुः: उन्हें योगवार्तिकम् (IV) से जोड़ा जाता है, क्योंकि उन्होंने इस ग्रंथ पर व्याख्या दी थी।

6. उत्तर (2):

व्याख्या: "यो कुत्सितं बहु भाषेते" इति वाक्ये वाचालः च वाचाटः यः व्यक्तिः अधिकं निंदा भाषां कुर्वन् स्थितः। तस्मिन्नेव शब्दे एते द्वे विकल्पे उपयुक्ता:।

"यो कुत्सितं बहु भाषेते" इस वाक्य का अर्थ है, जो व्यक्ति अधिक निंदा या आलोचना करता है। ऐसे व्यक्तियों को वाचालः (जो बहुत बोलता है) और वाचाटः (जो निरर्थक या निंदा करता है) कहा जाता है। ये दोनों ही व्यक्तित्व के गुण हैं जो अधिक निंदा करने वाले होते हैं। इसलिए विकल्प B और C सही हैं।

7. उत्तर (1):

व्याख्या:"विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम" इति वाक्ये निरुक्ते ग्रंथे विद्या ब्राह्मणं प्राप्ता इति उल्लिखितं अस्ति। यत्र ब्राह्मणस्य विद्या संरक्षणे निरुक्ते तात्त्विक अर्थः प्रतिपाद्यते।

"विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम" यह वाक्य निरुक्ते ग्रंथ से लिया गया है, जिसमें विद्या का महत्व ब्राह्मणों से जुड़ा हुआ बताया गया है। निरुक्त में विद्या का उद्देश्य ब्राह्मणों के ज्ञान को सुरक्षित करना और प्रसारित करना है। इस वाक्य में विद्या के संरक्षण और महत्व को उजागर किया गया है। इसलिए सही उत्तर निरुक्ते है।

8. उत्तर (2):

व्याख्या: जगती-छन्दसा सम्बद्धविषयौ अष्टचत्वारिंशद्वर्णाः च अतिच्छन्दः इति भागे व्यवहृताः। अत्र अष्टचत्वारिंशद्वर्णाः च अतिच्छन्दः जगती छन्दस्य भागं दर्शयन्ति।

जगती-छन्दसा सम्बद्धविषय में अष्टचत्वारिंशद्वर्णाः और अतिच्छन्दः मुख्य रूप से आते हैं। यह दोनों विषय जगती छन्द से संबंधित हैं, जिसमें अष्टचत्वारिंशद्वर्णाः (48 वर्णों वाला छन्द) और अतिच्छन्दः (अत्यधिक मात्रा वाला छन्द) उल्लेखित होते हैं। इन दोनों का संबंध जगती छन्द के विशेष प्रकार से होता है। इसलिए सही उत्तर A, C है।

9. उत्तर (2):

व्याख्या:

1. इन्द्रः: इन्द्र का संबंध बृहत्साम (II) से है, क्योंकि बृहत्साम इन्द्र से जुड़ा हुआ है।
2. अद्रिः: अद्रि का संबंध रथन्तर साम (III) से है, क्योंकि रथन्तर साम पहाड़ी और प्रकृति से जुड़ा हुआ है।
3. आदित्यः: आदित्य का संबंध वैरूपं साम (IV) से है, क्योंकि आदित्य सूर्य के रूप में वैरूपों को दर्शाता है।
4. वरुणः: वरुण का संबंध धृतव्रतः (I) से है, क्योंकि वरुण पवित्रता और व्रत से संबंधित है।

10. उत्तर (2):

व्याख्या: भवभूतेः प्रसिद्धं उपाधिद्वयं "वश्यवाक्" च "परिणतप्रज्ञः" इति अस्ति। एते नामे भवभूतेः काव्यप्रतिभां च विचारधारां दर्शयन्ति।

भवभूतेः काव्यशास्त्र में प्रसिद्ध उपाधियाँ "वश्यवाक्" और "परिणतप्रज्ञः" हैं। "वश्यवाक्" उनका वह नाम है जो उनकी प्रभावशाली वाणी और लेखनी को दर्शाता है, जबकि "परिणतप्रज्ञः" उनका उपनाम है, जो उनके गहरे ज्ञान और परिपक्वता को व्यक्त करता है। ये दोनों उपाधियाँ उनके काव्यात्मक और दार्शनिक गुणों को प्रकट करती हैं। इसलिए सही उत्तर C और D है।

11. उत्तर (2):

व्याख्या: कालक्रमेण आचार्याणां नामानि कैय्यटः, भर्तृहरिः, वामनजयादित्यौ, भट्टोजिदीक्षितः इति यथासंयोजितानि। एते आचार्याः तादृशे काव्यशास्त्रं प्रतिपादयन्ति।

आचार्याणां नामानि कालक्रमेण "कैय्यटः, भर्तृहरिः, वामनजयादित्यौ, भट्टोजिदीक्षितः" इति यथासंयोजितानि। कैय्यटः प्राचीन काव्यशास्त्री थे, जबकि भर्तृहरि का योगदान नीतिशास्त्र और काव्यशास्त्र में था। वामनजयादित्यौ और भट्टोजिदीक्षितः ने शास्त्रों के विभिन्न पक्षों को सुस्पष्ट किया। इन आचार्यगणों ने संस्कृत साहित्य को महत्वपूर्ण दिशा दी।

12. उत्तर (3):

व्याख्या: न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्यां सप्त पदार्थाः निरूपिताः सन्ति। एते पदार्थाः न्यायशास्त्रस्य विविधदृष्टिं सूचयन्ति।

"न्यायसिद्धान्तमुक्तावली" में कुल सप्त पदार्थों का निरूपण किया गया है। ये पदार्थ न्यायशास्त्र में महत्वपूर्ण हैं और किसी भी तर्क या विवाद को स्पष्ट करने के लिए उपयोगी होते हैं। इन पदार्थों का वर्णन न्याय के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। इसलिए सही उत्तर सप्त पदार्थों का होना है।

13. उत्तर (3):

व्याख्या: साङ्ख्यकारिकायां प्रत्ययसर्गस्यावान्तरभेदौ विपर्ययः च अशक्तिः रूपेण निरूपितौ सन्ति। एते द्वे भेदे प्रत्ययजन्यं भ्रमं च अज्ञानं दर्शयन्ति।

साङ्ख्यकारिकानुसारं प्रत्ययसर्ग के दो अवांतर भेद विपर्ययः और अशक्तिः होते हैं। विपर्ययः वह भ्रम है जो प्रत्यय के उल्टे रूप में उत्पन्न होता है, जबकि अशक्तिः वह स्थिति है जिसमें शक्ति की कमी होती है। ये दोनों भेद ज्ञान और अज्ञान के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार, सही उत्तर B और C है।

14. उत्तर (3):

व्याख्या: ब्राह्मीलिपेः विकसिते लिपी गुप्तलिपिः च शारदालिपिः रूपेण प्रतिपादिताः सन्ति। एते लिप्यां ब्राह्मी लिपेः परिवर्तनं दर्शयन्ति।

ब्राह्मीलिपी से विकसित होने वाली लिपियों में गुप्तलिपि और शारदालिपि शामिल हैं। गुप्तलिपि ने प्राचीन भारतीय लेखन में एक गुप्त रूप को विकसित किया, जबकि शारदालिपि ने कश्मीर क्षेत्र में प्रमुख स्थान प्राप्त किया। ये दोनों लिपियाँ ब्राह्मीलिपि से ही उत्पन्न हुईं और विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होती थीं। इसलिए, सही उत्तर A और B है।

15. उत्तर (2):

व्याख्या:

1. जेगीयते का संबंध यङन्तरूपम् (II) से है, क्योंकि यह जागने की प्रक्रिया को दर्शाता है।
2. निद्रापयति का संबंध णिजन्तरूपम् (I) से है, क्योंकि यह शारीरिक रूप से या मानसिक रूप से नींद में ले जाने वाली क्रिया है।
3. दिदृक्षते का संबंध सन्नन्तरूपम् (IV) से है, क्योंकि यह देखने की इच्छा को सूचित करता है।
4. कलहायते का संबंध नामधातुरूपम् (III) से है, क्योंकि यह किसी नाम या क्रिया से संबंधित होता है जो कलेश या झगड़े का कारण होता है।

16. उत्तर (2):

व्याख्या: सात्त्विकपुराणद्वयं "भागवतपुराणम्" च "विष्णुपुराणम्" इति स्तः। एते पुराणे तत्त्वज्ञानं, भक्ति व विषयदृष्टिं प्रमुखं रूपेण प्रतिपादयन्ति।

सात्त्विक पुराण वे होते हैं जो तत्त्वज्ञान, भक्ति, और शांति की ओर मार्गदर्शन करते हैं। भागवतपुराण और विष्णुपुराण दोनों का महत्व विशेष रूप से भक्ति और भगवान विष्णु के उपासना में होता है। इन पुराणों में जीवन के उच्चतम उद्देश्य की ओर निर्देशित किया जाता है। इसलिए, सही उत्तर B और D है।

17. उत्तर (3):

व्याख्या: अनुबन्धचतुष्टये "अधिकारी" च "विषयः" इति परिगणितौ। एते द्वे तत्त्वे अनुबन्धक संबंधं दर्शयन्ति।

अनुबन्धचतुष्टय में अधिकारी और विषय परिगणित होते हैं। अधिकारी वह है जो किसी क्रिया या कर्म को करने का अधिकारी होता है, और विषय वह है जिस पर कर्म किया जाता है। ये दोनों तत्त्व अनुबन्ध के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करते हैं। इसलिए सही उत्तर A और C है।

18. उत्तर (3):

व्याख्या: स्त्रीलिङ्गे शतृप्रत्ययान्तं पदद्वयं "सती" च "जाग्रती" इति अस्ति। एते पदे स्त्रीलिङ्गे शतृप्रत्ययस्य प्रयोगं सूचयन्ति।

शतृप्रत्यय से बने शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं, जैसे "सती" और "जाग्रती"। ये शब्द स्त्रीलिङ्ग की विशेषता को व्यक्त करते हैं और शतृप्रत्यय के प्रयोग से बने होते हैं। "सती" और "जाग्रती" दोनों ही स्त्रीलिङ्ग के उदाहरण हैं। इसलिए सही उत्तर B और D है।

19. उत्तर (4):

व्याख्या: शब्दप्रवृत्तीनां यथाशास्त्रक्रमं "गोः", "शुक्लः", "चलः", "डित्थः" इति क्रमबद्धानि। एते शब्दाः शास्त्रसंगतं यथाक्रमं दर्शयन्ति।

शास्त्रक्रमेण "गोः", "शुक्लः", "चलः", "डित्थः" शब्दों की प्रवृत्तियाँ इस प्रकार व्यवस्थित हैं। "गोः" से शुरुआत होती है, जो संस्कृत में संज्ञा के रूप में पहले आता है। इसके बाद "शुक्लः", "चलः", और "डित्थः" शब्द आते हैं। इसलिए सही उत्तर C, B, D, A है।

20. उत्तर (2):

व्याख्या: इस प्रश्न में दिए गए नामों के साथ उनके संबंधित ग्रंथों को मेल करना है। निम्नलिखित विवरण दिया गया है:

1. पण्डिता क्षमारावः - यह "स्वराजविजयम्" के लेखक हैं। यह ग्रंथ भारतीय स्वतंत्रता और स्वराज्य की महत्वपूर्ण चर्चा करता है, और पण्डिता क्षमारावः ने इसे लिखा।

2. वेंकटराम-राघवन् - यह "अभिनवसुन्दरी" के लेखक हैं। यह एक प्रसिद्ध संस्कृत काव्य है, और वेंकटराम-राघवन् ने इस पर काव्य रचनाएँ की हैं।
3. अम्बिकादत्त-व्यासः - उन्होंने "गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्" लिखा है। यह एक संस्कृत ग्रंथ है जिसमें गुप्तकाल की सामाजिक और धार्मिक स्थिति पर विचार किया गया है।
4. श्रीधरभास्कर वर्णेकर - यह "शिवराज्योदयः" के लेखक हैं। यह ग्रंथ शिवाजी के राज्यारोहण और उनके शासन के प्रारंभ को दर्शाता है।

21. उत्तर (3):

व्याख्या: "भक्त्या ध्वनेः एकत्वं नास्ति" इति वाक्ये रूपभेदात् ध्वन्यर्थे भेदं सूचयन्ति। भक्त्याः रूपेण ध्वन्यं एकत्वं न प्राप्तं अस्ति।

"भक्त्या ध्वनेः एकत्वं नास्ति" इस वाक्य में रूपभेद के कारण ध्वन्यर्थ का एकत्व नहीं होता है। यहाँ रूपभेद से तात्पर्य है कि शब्द या ध्वनि का रूप अलग-अलग अर्थों को व्यक्त कर सकता है, जिसके कारण एक ही ध्वनि से विभिन्न अर्थ उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार, एक ही ध्वनि के विभिन्न रूप होते हैं, जिससे कोई निश्चित एकत्व स्थापित नहीं होता। इसलिए, सही उत्तर रूपभेदात् है।

22. उत्तर (3):

व्याख्या: "कालिकापुराणम्" उपपुराणे श्रेणीगतं अस्ति। एषा पुराणे विशेषत: देवी कालिका के विषय में विवरणं कृतं अस्ति।

"कालिकापुराणम्" एक उपपुराण है जो विशेष रूप से देवी कालिका के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। यह पुराण देवी के पूजा, महिमा और उनके विभिन्न रूपों का वर्णन करता है। अन्य पुराणों के मुकाबले यह देवी कालिका से संबंधित धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इसलिए, सही उत्तर कालिकापुराणम् है।

23. उत्तर (2):

व्याख्या: ऋग्वेदे सूक्तानि कालक्रमेण "विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्तम्", "यम-यमी-संवादसूक्तम्", "पुरुरवा-उर्वशी-संवादसूक्तम्", "सरमा-पणि-संवादसूक्तम्" इति यथाक्रमं व्यवस्थितानि। एते सूक्तानि संवादप्रधानं धार्मिककाव्यात्मकं दृष्टिकोणं दर्शयन्ति।

ऋग्वेद में चार प्रमुख संवादसूक्त हैं, जो कालक्रम से व्यवस्थित हैं। पहले "विश्वामित्र-नदी-संवादसूक्तम्" आता है, फिर "यम-यमी-संवादसूक्तम्", "पुरुरवा-उर्वशी-संवादसूक्तम्", और अंत में "सरमा-पणि-संवादसूक्तम्"। ये सूक्त संवादप्रधान होते हुए जीवन, मृत्यु, प्रेम, और अन्य विषयों पर आधारित हैं। इसलिए सही उत्तर C, D, A, B है।

24. उत्तर (3):

व्याख्या: "धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ" इति श्लोकः महाभारतस्य अनुशासनपर्वे अस्ति। एषः श्लोकः जीवनधर्मेण च चारित्रेण च सम्बद्धं तत्त्वं स्पष्टयति।

"धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ" यह श्लोक महाभारत के अनुशासन पर्व से है। इसमें यह कहा गया है कि जो कुछ भी इस जीवन में है, वही अन्यत्र भी मिलेगा, और जो यहाँ नहीं है, वह कहीं नहीं मिलेगा। यह श्लोक जीवन के चार पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—के संबंध में महत्वपूर्ण सिद्धांतों को स्पष्ट करता है। इसलिए सही उत्तर महाभारत है।

25. उत्तर (3):

व्याख्या: "कमलेव मतिः मतिरिव कमला तनुरिव विभा विभेव तनुः" इत्यत्र उपमेयोपमा अलंकारः दृश्यते। अत्र प्रत्येकं शब्दं एकं अन्यं रूपं यथा "कमला", "तनु", "धरणी" इत्यादीनि उपमेय रूपेण प्रतिपद्यन्ते।

इस श्लोक में उपमेयोपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है। इसमें "कमलेव मतिः", "तनुरिव विभा" और "धरणीव धृतिधृतिरिव" जैसे उदाहरण हैं, जहाँ एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ तुलना करके उसका गुण दिखाया गया है। जैसे, "कमलेव मतिः" में 'मतिः' को 'कमला' के समान रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह तुलना करने का तरीका उपमेयोपमा अलंकार कहलाता है।

26. उत्तर (3):

व्याख्या: "उषसो विशेषणे" अस्ति यत्र "राष्ट्री" च "चिकितुषी" शब्देण उषसि विशेषणं न दृश्यते। एते शब्दे उषसि विशिष्टं रूपं प्रतिपादयन्ति न तु विशेषणं कर्तुम्।

"उषसो विशेषणे" का अर्थ है उषा (प्रातःकाल) के लिए जो विशेषण होते हैं। "राष्ट्री" और "चिकितुषी" शब्दों में उषा का विशेषण नहीं किया गया है, क्योंकि ये शब्द उषा के संदर्भ में कोई गुण या विशेषता नहीं दर्शाते। इसके विपरीत, "ऋतावरी" और "रेवती" शब्द उषा के संदर्भ में विशेषण के रूप में उपयोग किए जाते हैं। इसलिए सही उत्तर B और C है।

27. उत्तर (3):

व्याख्या: "विश्वपाः" च "मघवा" शब्दे पुंल्लिङ्गे अस्ति, ये विशेषतया देवतासंवन्धितानि शब्दाः सन्ति। अन्ये शब्दे, यथा "मधु" च "वारि", स्त्रीलिङ्गे व्युत्पन्नाः।

"विश्वपाः" और "मघवा" ये दोनों शब्द पुंल्लिङ्ग में होते हैं, और ये विशेष रूप से देवताओं से संबंधित होते हैं। "विश्वपाः" शब्द का प्रयोग देवताओं के लिए होता है, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को नियंत्रित करते हैं। वहीं, "मघवा" शब्द का भी उपयोग देवता, विशेषत: इन्द्रदेव के लिए किया जाता है। इसके विपरीत, "मधु" और "वारि" शब्द स्त्रीलिङ्ग के होते हैं, जो परिष्कृत रूप में

स्त्रियों या अन्य पदार्थों के लिए होते हैं। इसलिए सही उत्तर A और D है।

28. उत्तर (1):

व्याख्या:

1. आख्यातोपयोगे का संबंध "उपाध्यायात् अधीते" (III) से है, क्योंकि आख्यायिका और उपदेश में यह उपयोग होता है।
2. जनिकर्तुः प्रकृतिः का संबंध "ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते" (IV) से है, क्योंकि प्रकृति में उत्पत्ति का विचार होता है।
3. अकथितं च का संबंध "वृक्षमवचिनोति फलानि" (I) से है, क्योंकि यह वृक्षों की कथा से संबंधित है, जो फल देते हैं।
4. तुमर्थाच्च भाववचनात् का संबंध "यागाय याति" (II) से है, क्योंकि याग की क्रिया और भाववचन का संबंध होता है।

29. उत्तर (4):

व्याख्या: यजुर्वेदे आरण्यकं "शाङ्खायनारण्यकम्" अस्ति न, यत् यजुर्वेदे अन्यत्र आरण्यकग्रन्थाः प्राप्ताः। बृहदारण्यकम्, तैत्तरीयारण्यकम् च मैत्रायणीयारण्यकम् यजुर्वेदीयग्रन्थे अस्ति।

यजुर्वेद में "शाङ्खायनारण्यकम्" आरण्यक नहीं है, जबकि अन्य तीन आरण्यक ग्रंथ बृहदारण्यकम्, तैत्तरीयारण्यकम् और मैत्रायणीयारण्यकम् यजुर्वेद से संबंधित हैं। इन आरण्यकों में व्रत, यज्ञ, और धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित निर्देश दिए गए हैं। शाङ्खायनारण्यकम् विशेष रूप से सामवेद से संबंधित है, इसलिए यह यजुर्वेद में नहीं आता।

30. उत्तर (2):

व्याख्या: श्लिष्ट-योगात्मक भाषायाः सिद्धान्ते तुर्की-भाषा न स्थितं अस्ति। अन्ये भाषायाः यथा लैटिन, ग्रीक, रूसी श्लिष्ट-योगात्मकतां सूचयन्ति।

श्लिष्ट-योगात्मक भाषाएँ वे होती हैं जिनमें शब्दों के जोड़ने का विशेष तरीका होता है, जैसे कि नए शब्दों का निर्माण विशेष प्रत्ययों या उपसर्गों से होता है। लैटिन, ग्रीक, और रूसी भाषाएँ श्लिष्ट-योगात्मक भाषाएँ हैं, क्योंकि इनमें व्याकरणिक नियमों के आधार पर शब्दों का संयोजन होता है। इसके विपरीत, तुर्की भाषा इस श्रेणी में नहीं आती, क्योंकि इसका व्याकरणिक संरचना अलग होती है।

31. उत्तर (2):

व्याख्या: कालक्रमेण "ध्वनिसम्प्रदायः" पूर्वतः आगच्छति, ततः "वक्रोक्तिसम्प्रदायः" तु मध्यकाले अस्ति। "अलङ्कारसम्प्रदायः" यः समकालीन कला साहित्ये प्रसिद्धः अस्ति।

"ध्वनिसम्प्रदायः" प्राचीनतम सम्प्रदाय है, जो साहित्य में ध्वन्यात्मकता को महत्व देता है। इसके बाद "वक्रोक्तिसम्प्रदायः" आता है, जो भाषा में वक्रोक्तियों का उपयोग करता है। "अलङ्कारसम्प्रदायः" समकालीन साहित्य में अलंकारों का प्रयोग करता है, और "रससम्प्रदायः" साहित्य में रसों के प्रयोग पर ध्यान केंद्रित करता है। इसलिए, सही क्रम है D, C, A, B।

32. उत्तर (3):

व्याख्या: "प्रद्वेषो बहुमानी वा सङ्कल्पादुपजायते । भर्तृदाराभिलाषित्वादस्यां में महती स्वता ॥" इति उक्तिः योगन्धरायणस्य द्वारा कथितं अस्ति। एषा उद्धरणे आत्मसमर्पणस्य, अहंकारस्य च विश्लेषणं कृतं अस्ति, यत्र प्रद्वेषस्य कारणं स्वार्थपूर्णता दर्श्यते।

"प्रद्वेषो बहुमानी वा सङ्कल्पादुपजायते" यह उद्धरण योगन्धरायण के द्वारा कहा गया है, जिसमें यह बताया गया है कि द्वेष या अहंकार का उत्पत्ति व्यक्ति के मानसिक संस्कारों और विचारों से होती है। यहाँ पर भर्तृदाराभिलाषित्व का अर्थ है किसी से अत्यधिक चाहत या अपेक्षाएँ रखना, जो व्यक्ति को स्वयं की अस्वीकृति और दूसरों के प्रति द्वेष का कारण बनाती हैं। योगन्धरायण इस उद्धरण में यह बताना चाहते हैं कि अपने आप से असंतुष्टता और दूसरों से अत्यधिक अपेक्षाएँ मानसिक अशांति का कारण बनती हैं। इसलिए इस उद्धरण में प्रद्वेष और अहंकार के कारणों का गहरा विश्लेषण किया गया है।

33. उत्तर (3):

व्याख्या: "क्लेश" इति पदस्य अर्थः अविद्यादयः क्लेशाः अस्ति, यत्र अविद्या, राग, द्वेष, कर्मफलाशक्ति च जीवस्य दुःखजनकानि कारणानि सन्ति। एते क्लेशाः जीवस्य मुक्तिं बाधयन्ति, यः ईश्वरं अपरामृष्टं कर्मफलवशात् मुक्तः अस्ति।

"क्लेश" शब्द का अर्थ है अविद्यादि क्लेश, जैसे अविद्या, राग, द्वेष, और कर्मफलाशक्ति। ये सभी मानसिक और आत्मिक कष्टों के कारण हैं जो जीवन में दुःख उत्पन्न करते हैं। इस सूत्र में यह बताया गया है कि ईश्वर इन क्लेशों से परे हैं, अर्थात् वह इन बंधनों और कष्टों से मुक्त हैं। यह अवधारणा यह संकेत करती है कि ईश्वर अपनी सर्वोत्तमता में स्वतंत्र और निर्विकल्प हैं, जबकि जीव इन क्लेशों के प्रभाव से बंधे हुए हैं।

34. उत्तर (1):

व्याख्या: "पदमञ्जरी" इति व्याख्या काशिकायाः संस्कृतव्याकरणे प्रसिद्धा अस्ति। एषा व्याख्या पाणिनीयसूत्राणां विस्तृतविवेचनं करणीयम्।

"पदमञ्जरी" काशिकायाः की एक प्रसिद्ध व्याख्या है, जो संस्कृत व्याकरण के संदर्भ में पाणिनीय सूत्रों का विस्तार से विश्लेषण करती है। यह व्याख्या पाणिनि के सूत्रों की सही समझ और उपयोग को सरल और स्पष्ट बनाती है। काशिकायां पाणिनीय व्याकरण के नियमों का गहरा विवेचन मिलता है। इसलिए, "पदमञ्जरी" काशिकायाः से संबंधित है।

JUNE

2019

UGC NET SANSKRIT

QUESTIONS WITH SOLUTION

पेपर II

1. निम्नलिखितेषु कतमं ब्राह्मणं 'सामवेदीयं' नास्ति?
(1) ताण्ड्यब्राह्मणम्
(2) शतपथब्राह्मणम्
(3) षड्विंशब्राह्मणम्
(4) छान्दोग्यब्राह्मणम्

2. निम्नलिखितेषु केन ज्योतिषशास्त्रमाधृत्यं ऋग्वेदस्य कालो निर्धारित:?
(1) वेबरमहोदयेन
(2) मैक्डानलमहोदयेन
(3) बालगंगाधर तिलकमहोदयेन
(4) विल्सनमहोदयेन

3. 'काण्वशतपथब्राह्मणम्' केन वेदेन सम्बद्धम् अस्ति?
(1) ऋग्वेदेन
(2) अथर्ववेदेन
(3) यजुर्वेदेन
(4) सामवेदेन

4. कौषीतकिब्राह्मणं केन वेदेन सम्बद्धमस्ति?
(1) शुक्लयजुर्वेदेन
(2) कृष्णयजुर्वेदेन
(3) ऋग्वेदेन
(4) सामवेदेन

5. दुर्गेण कस्मिन् ग्रन्थे टीका लिखिता?
(1) बृद्देवतायाम्
(2) बौधायनगृह्यसूत्रे
(3) कात्यायनशुल्बसूत्रे
(4) निरुक्ते

6. 'ऋग्वेदसंहितायाः ' पदपाठकारो निम्नलिखितेषु कोऽस्ति?
(1) गार्ग्यः
(2) शाकल्यः
(3) शौनकः
(4) यास्कः

7. 'यजुर्वेदस्य' निम्नलिखितभाष्यकारेषु कोऽर्वाचीनतमः?
(1) स्वामी दयानन्दः
(2) रावण:
(3) उव्वट
(4) महीधरः

8. निम्नलिखितेषु ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारः कोऽस्ति?
(1) वेङ्कटमाधव:
(2) सायणः
(3) उब्बट
(4) स्कन्दस्वामी

9. 'माध्यन्दिनशाखायाः' अपरनाम किं प्रचलितमस्ति?
(1) कैथुमशाखा
(2) बौधायनीशाखा
(3) वाजसनेयीशाखा
(4) मैत्रायणीशाखा

10. 'वाष्कलशाखा' कस्य वेदस्य विद्यते?
(1) ऋग्वेदस्य
(2) सामवेदस्य
(3) यजुर्वेदस्य
(4) अथर्ववेदस्य

11. ऋग्वेदे वरुणसूक्तस्य (1.2) ऋषिः कः?
(1) शुनःशेपः
(2) मधुच्छन्दाः
(3) हिरण्यस्तूपः
(4) गौतमः

12. "यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् कतुना पर्यभूषत्" मन्त्रांशोऽयं कस्य सूक्तस्य विद्यते?
(1) सूर्यसूक्तस्य
(2) वरुणसूक्तस्य
(3) अग्निसूक्तस्य
(4) इन्द्रसूक्तस्य

13. "सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षातपो ब्रह्मयज्ञः पृथिवीं धारयन्ति" मन्त्रांशोऽयं कस्मिन् वेदे विद्यते?
(1) ऋग्वेदे
(2) यजुर्वेद
(3) सामवेदे
(4) अथर्ववेद

14. दर्शयज्ञः कस्यां तिथौ क्रियते?
(1) पौर्णमास्याम्
(2) अमावस्याम्
(3) अष्टम्याम्
(4) चतुर्दश्याम्

15. पञ्चमहायज्ञेषु किं न गण्यते?
(1) देवयज्ञः
(2) पितृयज्ञः
(3) ब्रह्मयज्ञः
(4) विष्णुयज्ञः

16. "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः" अत्र 'जिजीविषेत्' पदस्य कोऽर्थः?
(1) जीवितुमिच्छेत्
(2) जेतुमिच्छेत्
(3) ज्ञातुमिच्छेत
(4) प्राप्तुमिच्छेत्

17. 'भवाति' रूपमिदं कस्य लकारस्य विद्यते?
(1) लोट्लकारस्य (2) विधिलिङ्लकारस्य
(3) लेट्लकारस्य (4) लुट्लकारस्य

18. 'ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं ' समानाक्षराणां का संख्या?
(1) षड् (2) अष्टौ
(3) पञ्च (4) सप्त

19. 'षड् भावविकारा भवन्ति मतमिदं कस्य विद्यते?
(1) वार्ष्यायणे (2) शाकपूणे:
(3) शाकटायनस्य (4) यास्कस्य

20. अभिनिहितस्वरितो भेदोऽस्ति
(1) आश्रितस्वरितस्य (2) जाल्यस्वरितस्य
(3) तैरोविरामस्वरितस्य (4) स्वतन्त्रस्वरितस्य

21. वेदान्तदर्शनानुसारं जगतः प्रपञ्चः किं कथ्यते?
(1) ईश्वरस्य स्वरूपम् (2) अनन्तसत्ता
(3) अनादितत्त्वम् (4) विवर्तः

22. तर्कभाषानुसारम् इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कस्य कारणम्?
(1) अनुमानस्य (2) प्रत्यक्षस्य
(3) उपमानस्य (4) इन्द्रियस्य

23. निम्नलिखितेषु को हेत्वाभासो नास्ति?
(1) असिद्धः (2) विरुद्ध:
(3) अनैकान्तिकः (4) असत्प्रतिपक्षः

24. तर्कसंग्रहानुसारं पदार्थाः कति सन्ति?
(1) सप्त (2) षोडश
(3) नव (4) दश

25. चार्वाकदर्शनस्य कृते किम् अपरनाम प्रचलितमस्ति? (1)
ब्रह्मदर्शनम् (2) परलोकदर्शनम्
(3) ऐहलौकिकदर्शनम् (4) लोकायतदर्शनम्

26. निम्नलिखितेषु दर्शनेषु किं दर्शनं परमात्मनः सृष्टिकर्तृत्वं न मन्यते?
(1) आर्हतदर्शनम् (2) न्यायदर्शनम्
(3) वेदान्तदर्शनम (4) योगदर्शनम्

27. जीवाजीवाख्ये द्वे तत्त्वे कस्मिन् दर्शने मन्येते?
(1) बौद्धदर्शने (2) सांख्यदर्शने
(3) वेदान्तदर्शने (4) जैनदर्शने

28. अधोऽङ्कितेषु योगदर्शनानुसारेण समुचितः क्रमोऽस्ति
(1) अस्तेय अपरिग्रहाः सत्य ब्रह्मचर्य अहिंसाः
(2) अपरिग्रहाः ब्रह्मचर्य सत्य अस्तेय अहिंसा:
(3) अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रहाः
(4) सत्य-अहिंसा अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रहाः

29. कर्मकाण्डस्य प्रधानता कस्मिन् दर्शने प्रतिपाद्यते?
(1) न्यायदर्शने (2) चार्वाकदर्शने
(3) मीमांसादर्शने` (4) योगदर्शने

30. 'श्लोकवार्तिकम्' कस्य दर्शनस्य ग्रन्थोऽस्ति?
(1) मीमांसादर्शनस्य (2) वेदान्तदर्शनस्य
(3) न्यायदर्शनस्य (4) सांख्यदर्शनस्य

31. बौद्धदर्शने पञ्चविधस्कन्धेषु परिगणितो नास्ति
(1) विज्ञानम् (2) वेदना
(3) संज्ञा (4) विशेषणम्

32. अधोलिखितेषु वेदान्तमते असमीचीनं कथनं चिनुत
(1) काम्यकर्माणि स्वर्गादिसाधनानि
(2) निषिद्धानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि
(3) नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि
(4) नैमित्तिकानि प्रायश्चित्तादीनि कर्माणि पापक्षयादिसाधनानि

33. अनुमितिज्ञाने व्यापार उच्यते
(1) करणम् (2) परामर्शः
(3) व्याप्तिः (4) हेतु:

34. सवितर्का समापत्तिः उच्यते
(1) शब्दार्थज्ञानविकल्पैः सङ्कीर्णा
(2) स्वरूपशून्येवार्थमात्रनिर्भासा
(3) श्रुतानुमानप्रज्ञाभ्यामन्यविषया
(4) उक्तेषु त्रिषु न कोऽपि

35. वेदान्तसारमतेन कर्मेन्द्रियाणामुत्पत्तिः भवति
(1) आकाशादीनां रजोंऽशेभ्योः समस्तेभ्यः
(2) आकाशादीनां रजोंऽशेभ्योः व्यस्तेभ्यः
(3) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो व्यस्तेभ्यः
(4) आकाशादीनां सत्त्वांशेभ्यो समस्तेभ्यः

36. 'उद्भिदा यजेत पशुकामः' इत्यत्र 'उद्भिद्' शब्दो यागस्य नामधेयो भवति
(1) मत्त्वर्थलक्षणाभयात् (2) वाक्यभेदभयात्
(3) तत्प्रख्यशास्त्रात् (4) तद्व्यपदेशात्

37. भावनायां लिङ्गादिज्ञानं करणं भवति
(1) भावनोत्पादकत्वेन
(2) शब्द भावनानिवर्तकत्वेन
(3) आर्थीभावनोत्पादकत्वेन
(4) शब्द भावनाभाव्यनिर्वतकत्वेन

38. चक्षुषा घटरूपत्वग्रहणे कः सन्निकर्षः भवति?
(1) समवायः (2) संयुक्तसमवायः
(3) संयुक्तसमवेतसमवायः (4) विशेषणविशेष्यभावः

39. सत्कार्यवादस्य समर्थने हेतुर्नास्ति
(1) असदकरणम् (2) सर्वसम्भवाभावः
(3) शक्तस्य शक्यकरणम् (4) सर्वसम्भव-भावः

40. आर्हतदर्शने चतुर्विधबन्धेषु परिगणितो नास्ति
(1) प्रकृतिबन्धः (2) विषयबन्धः
(3) स्थितिबन्धः (4) प्रदेशबन्ध

41. पाणिनीयशिक्षायाम् अधमपाठकेषु को न परिगणितः?
(1) गीती (2) लिखितपाठकः
(3) पदानि विच्छिद्य पाठकः (4) शीघ्री

42. अधोलिखितेषु केण्टुमवर्गे नास्ति ।
(1) जर्मन भाषा (2) रूसी भाषा
(3) फ्रेंच भाषा (4) ग्रीक भाषा

43. अधोलिखितेषु खकारस्य बाह्यप्रयत्नविषयकम् उपयुक्ततमं विकल्पं चिनुत
(1) विवारः, श्वास, अघोषः, अल्पप्राणः
(2) संवारः, नाद; घोषः, अल्पप्राणः
(3) विवारः, श्वास, अघोषः, महाप्राणः
(4) संवारः, नादः, घोषः, महाप्राणः

44. आकृतिमूलकवर्गीकरणे हिन्दीभाषा मन्यते
(1) प्रश्लिष्ट – बहिर्मुखी
(2) श्लिष्टबहिर्मुखी वियोगात्मिका
(3) श्लिष्टबहिर्मुखी संयोगात्मिका
(4) श्लिष्टान्तर्मुखी वियोगात्मिका

45. अधस्तनीयानां युग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत

सूची I	सूची II
A. पाणिनिः	I. वृत्तिः
B. कात्यायनः	II. सूत्रम्
C. पतञ्जलिः	III. वार्तिकम्
D. जयादित्यः	IV. इष्टि

कूट

	A	B	C	D
(1)	I	II	III	IV
(2)	I	III	II	IV
(3)	III	II	IV	I
(4)	II	III	IV	I

46. अधोलिखितेषु अर्थविस्तारस्योदाहरणं नास्ति
(1) गवेषणा (2) तैलम्
(3) प्रवीणः (4) श्राद्धः

47. अधोलिखितेषु का वैदिकभाषायाः विशेषता नास्ति
(1) सानुनासिकस्वराणां प्रयोगः
(2) 'लेट्' लकारस्य प्रयोगः
(3) तुमुन्नर्थे तवैप्रत्ययस्य प्रयोगः
(4) क्त्वार्थे तवेङ्प्रत्ययस्य प्रयोगः

48. पाणिनीयशिक्षानुसारं कस्य प्राणिनः ध्वनिः एकमात्रिकवर्णतुल्यः भवति
(1) नकुलस्य (2) शिखिनः
(3) वायसस्य (4) चाषस्य

49. अधोलिखितेषु वैदिकभाषादृशा साधुप्रयोगो मन्यते
(1) देवेभिः (2) विश्वा
(3) एमसि (4) उक्ताः सर्वेऽपि साधवः

50. ग्रिमनियमानुसारेण तवर्गीयध्वनिनां परिवर्तनक्रमोऽस्ति
(1) द > ध > ध > थ, थ > त
(2) त > थ, द > ध, ध > त
(3) थ > ध, त > द, ध > द
(4) त > थ, ध > ध द, द > त

51. अधोलिखितेषु भर्तृहरिमतेन ध्वनेः भेदद्वयं चिनुत
(1) पश्यन्ती, वैखरी (2) प्राकृतः, वैखरी
(3) प्राकृतः वैकृतः (4) वैखरी, वैकृतः

52. 'दीर्घञ्जसि च' इत्यनेन भवति
(1) पूर्वसवर्णदीर्घः (2) पूर्वसवर्णदीर्घस्य निषेधः
(3) वृद्धिः एकादेशः (4) गुणादेशस्याभाव:

53. 'प्र-एजते प्रेजते इत्यत्र एकारो भवति
(1) आद्गुणः सूत्रेण गुणत्वात्
(2) 'वृद्धिरेचि' सूत्रेण वृद्धित्वात्
(3) 'एङि' पररूपम् सूत्रेण पररूपत्वात्
(4) 'एङः पदान्तादति' सूत्रेण पूर्वरूपत्वात्

87. 'मनुस्मृतिः' कति अध्यायेषु विभक्ताऽस्ति?
(1) दशाध्यायेषु (2) एकादशाध्यायेषु
(3) त्रयोदशाध्यायेषु (4) द्वादशाध्यायेषु

88. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायः कतमोऽस्ति
(1) प्रथमः (2) द्वितीयः
(3) तृतीयः (4) चतुर्थः

89. कौटिलीय अर्थशास्त्रं कति अधिकरणेषु विभक्तमस्ति?
(1) अष्टदशाधिकरणेषु (2) द्वादशाधिकरणेषु
(3) दशाधिकरणेषु (4) पञ्चदशाधिकरणेषु

90. अशोकस्य शाहबाजगढीलेखः कस्यां लिप्यां प्राप्यते
(1) ब्राह्मी (2) खरोष्ठी
(3) शारदा (4) पुष्करी

91. 'प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्' पंक्तिरियं कस्याः विद्यायाः सन्दर्भेऽस्ति
(1) त्रय्याः (2) आन्वीक्षिक्या
(3) वार्तायाः (4) दण्डनीतेः

92. 'कौटिल्यमते कृषिपाशुपाल्ये वाणिज्या' इति विषयाः सन्ति
(1) त्रय्याः (2) दण्डनीतेः
(3) वार्तायाः (4) आन्वीक्षक्याः

93. मनुमते अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्य चाऽस्ति
(1) अविद्या (2) अतिभोजनम्
(3) उच्छिष्टभोजनम् (4) अवसिष्ट भोजनम्

94. मनुस्मृत्यानुसारं कति पाकयज्ञाः?
(1) चत्वारः (2) पञ्च
(3) षट् (4) दश

95. "विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छ्या विभजेत्सुतान्।" इति कस्य ग्रन्थस्य वचनमस्ति?
(1) मनुस्मृत्याः (2) याज्ञवल्क्यस्मृत्याः
(3) पाराशरस्मृत्याः (4) नारदस्मृत्याः

96. "नमो अरिहंतानां । नमो सर्वसिधानां ऐरेण महाराजेन.....।"
इति वाक्यं कस्मिन्नभिलेखे प्राप्यते?
(1) इलाहाबाद-लेखे (2) ऐहोल - शिलालेखे
(3) गिरनार लेखे (4) हाथीगुम्फा लेखे

97. अधस्तनानां केन अभिलेखेन सह कस्य सम्बन्धः? समीचीनां तालिकां चिनुत

सूची I	सूची II
A. रुद्रदामन:	I. हाथीगुम्फा
B. खारवेलस्य	II. मन्दसौर:
C. यशोधर्मणः	III. ऐहोल:
D. पुलकेशिनः	IV. गिरनार

कूट

	A	B	C	D
(1)	IV	I	II	III
(2)	I	II	III	IV
(3)	IV	III	II	I
(4)	III	I	IV	II

98. सारनाथ-बौद्धप्रतिमालेखस्य भाषाऽस्ति
(1) संस्कृतम् (2) प्राकृतम्
(3) पालि: (4) अपभ्रंशः

99. यशोधर्मणः मन्दसौर-स्तम्भलेखस्य लिपिरस्ति
(1) देवनागरी (2) ब्राह्मी
(3) खरोष्ठी (4) शारदा

100. अशोकस्य शाहबाजगढ़ी अभिलेखः कुत्र प्राप्यते?
(1) जूनागढ़-गुजरातप्रान्ते (2) पेशावर पाकिस्तानदेशे
(3) गुजर्रा - मध्यप्रदेशे (4) भावू – राजस्थानप्रदेशे

उत्तर कुंजी
पेपर II

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(2)	(3)	(3)	(3)	(4)	(2)	(1)	(4)	(3)	(1)
11	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
(1)	(4)	(4)	(2)	(4)	(1)	(3)	(2)	(1)	(4)
21	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**
(4)	(2)	(4)	(1)	(4)	(1)	(4)	(3)	(3)	(1)
31	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
(4)	(3)	(2)	(1)	(2)	(1)	(4)	(3)	(2)	(2)
41	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**
(3)	(2)	(3)	(2)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)	(4)
51	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
(3)	(2)	(3)	(1)	(4)	(1)	(3)	(2)	(2)	(1)
61	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**
(3)	(3)	(4)	(2)	(4)	(2)	(3)	(3)	(3)	(4)
71	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
(3)	(1)	(1)	(4)	(1)	(2)	(2)	(1)	(3)	(2)
81	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**
(4)	(1)	(4)	(2)	(4)	(3)	(4)	(2)	(4)	(2)
91	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
(2)	(3)	(2)	(1)	(2)	(4)	(1)	(2)	(2)	(2)

उत्तर

पेपर II

1. उत्तर (2):

व्याख्या: शतपथब्राह्मणं 'सामवेदीयं' नास्ति, यः ब्राह्मणग्रंथः यजुर्वेदे आधारितः अस्ति। अन्ये ब्राह्मणग्रंथाः सामवेदे आधारिताः सन्ति, जसे ताण्ड्यब्राह्मणं, षड्विंशब्राह्मणं, तथा छान्दोग्यब्राह्मणं।

शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद (विशेषकर **शुक्ल यजुर्वेद**) से संबंधित प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ है, न कि सामवेद से। सामवेद से संबंधित प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथों में **पञ्चविंश ब्राह्मण, षड्विंश ब्राह्मण, छान्दोग्य ब्राह्मण, सामविधान ब्राह्मण, आर्षेय ब्राह्मण, देवताध्याय ब्राह्मण, संहितोपनिषद् ब्राह्मण, वंश ब्राह्मण और जैमिनीय ब्राह्मण** शामिल हैं। शतपथ ब्राह्मण याज्ञवल्क्य ऋषि द्वारा रचित यज्ञ-विधियों, दार्शनिक विचारों और सृष्टि रहस्यों का विस्तृत संकलन है। सामवेदीय ब्राह्मणों में मुख्यतः सामगान विधियों और उपासना पद्धतियों का वर्णन मिलता है।

2. उत्तर (3):

व्याख्या: बालगंगाधर तिलकमहोदयेन ज्योतिषशास्त्रस्य आधारः ऋग्वेदस्य कालनिर्णयकं कृतम्। तस्मिन्स्थाने तेन तद्वेदकृत्या समये च गणनायां महत्त्वपूर्णं योगदानं प्रदानं कृतम्।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने ज्योतिषशास्त्र के आधार पर ऋग्वेद का कालनिर्णय करते हुए इसे चार युगों में विभाजित किया - **आदिति काल** (6000-4000 ई.पू.), **मृगशिरा काल** (4000-2500 ई.पू.), **कृतिका काल** (2500-1400 ई.पू.) और **अन्तिम काल** (1400-500 ई.पू.)। उन्होंने अपनी पुस्तक "दि आर्कटिक होम इन द वेदास" (1893) में ऋग्वेद में वर्णित नक्षत्रों, अयनांत और ऋतुओं के खगोलीय विश्लेषण द्वारा यह सिद्ध किया कि ऋग्वेद की रचना 6000 ई.पू. के आसपास हुई थी। तिलक ने विशेष रूप से **'उर्शा ध्रुवमसी'** (ध्रुव तारा) और **मृगशीर्ष** (ओरायन) नक्षत्र के संदर्भों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला।

अन्य विकल्प:

(1) वेबर: इन्होंने वैदिक साहित्य का भाषाई अध्ययन किया।

(2) मैक्डानल: ये वैदिक संस्कृति के इतिहासकार थ।

(4) विल्सन: ये ऋग्वेद के प्रथम अंग्रेजी अनुवादक थे।

3. उत्तर (3):

व्याख्या: काण्वशतपथब्राह्मणं यजुर्वेदे सम्बद्धं अस्ति। एषः ब्राह्मणग्रंथः यजुर्वेदे यथावत् संस्कृतिम्, कर्मकाण्डं च विशदं करोति। अन्ये ब्राह्मणग्रंथाः ऋग्वेदे, अथर्ववेदे, तथा सामवेदे आधारिताः सन्ति।

काण्वशतपथब्राह्मणम् एक प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ है, जो शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा से संबंधित है। शतपथब्राह्मणम् के दो प्रमुख संस्करण हैं:

1) **माध्यंदिन शतपथब्राह्मण** – जो माध्यंदिन शाखा से संबंधित है।
2) **काण्व शतपथब्राह्मण** – जो काण्व शाखा से संबंधित है।

दोनों ही शतपथब्राह्मण ग्रंथ **शुक्ल यजुर्वेद** के अंग माने जाते हैं। इनमें यज्ञ, वेदिक अनुष्ठान, और ब्रह्मज्ञान से संबंधित विस्तृत विवरण मिलता है।

4. उत्तर (3):

व्याख्या: कौषीतकिब्राह्मणं कृष्णयजुर्वेदे सम्बद्धं अस्ति। एषः ब्राह्मणग्रंथः कृष्णयजुर्वेदे स्थितं अस्ति, यः कर्मकाण्डं तथा यजुर्वेदीय प्रविधीन् विशदं करोति।

'कौषीतकि ब्राह्मण' ऋग्वेद से सम्बद्ध एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो बाष्कल शाखा से संबंधित है। इसे 'शांखायन' नाम से भी जाना जाता है। इसमें कुल 30 अध्याय हैं, जिनमें यज्ञ-विधियों जैसे अग्निहोत्र, सोमयज्ञ, राजसूय आदि का विस्तृत वर्णन है।

ऋग्वेद से मुख्य रूप से दो ब्राह्मण ग्रंथ जुड़े हैं:

(i) **ऐतरेय ब्राह्मण** (ऐतरेय आरण्यक का भाग)

(ii) **कौषीतकि ब्राह्मण** (कौषीतकि आरण्यक का भाग)।

5. उत्तर (4):

व्याख्या: दुर्गेण निरुक्ते ग्रन्थे टीका लिखिता अस्ति। निरुक्तं शब्दार्थविवेचनस्य ग्रन्थः अस्ति, यत्र शब्दानां अर्थाः विशदीकरणे कृताः सन्ति।

'दुर्गेण' का अर्थ है दुर्गाचार्य द्वारा 'निरुक्त' ग्रंथ पर लिखी गई टीका। इस टीका का नाम 'दुर्गावृत्तिः' है, जिसमें चतुर्दश निरुक्तों के अर्थ का विवरण दिया गया है। 'निरुक्त' ग्रंथ के लेखक महर्षि यास्क हैं। यह ग्रंथ वेदों के शब्दों के अर्थ और प्रयोगों को स्पष्ट करता है। दुर्गाचार्य ने इस पर टीका लिखी, जिसे 'दुर्गटीका' (निरुक्तवृत्ति) भी कहा जाता है।

6. उत्तर (2):

व्याख्या: 'ऋग्वेदसंहितायाः' पदपाठकारः शाकल्यः अस्ति। शाकल्यः वेदपाठस्य विशुद्धता रक्षां कृत्वा ऋग्वेदस्य शुद्धपाठं संस्थापयामास।

'ऋग्वेदसंहितायाः' पदपाठकर्ता '**शाकल्यः**' थे। वेदों में तीन प्रकार के पाठ होते हैं—**संहितापाठ**, **पदपाठ** और **क्रमपाठ**। 'पदपाठ' में वैदिक मंत्रों का सस्वर उच्चारण किया जाता है, जिसमें स्ववर्णसंधि का विभाजन किया जाता है। शाकल्य ने ऋग्वेद की संहिता के शुद्ध पाठ का संपादन और प्रमाणन किया। उनका योगदान वेदों के उच्चारण और अर्थ की शुद्धता में महत्वपूर्ण था। अन्य विकल्प—**गार्ग्यः** (निघण्टुकार), **शौनकः** (अनुक्रमणिकाकार), **यास्कः** (निरुक्तकार)।

7. उत्तर (1):

व्याख्या: यजुर्वेदस्य स्वामी दयानन्दः अर्वाचीनतमः भाष्यकारः अस्ति। स्वामी दयानन्दः आर्यसमाजे स्थापकं कृत्वा वेदवेदाङ्गानि विस्तरेण व्याख्यायामास। को समझाने का प्रयास था। उनका भाष्य प्रसिद्ध और ऐतिहासिक महत्व रखता है। **स्वामी दयानन्द** ने वेदों के पुनरुद्धार में तर्क, विज्ञान और तात्त्विक दृष्टिकोण को प्रमुखता दी। वे 19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान और आर्य समाज के संस्थापक थे। अन्य विकल्पों में **उव्वट** (प्राचीन भाष्यकार, याज्ञवल्क्य शाखा से संबंधित), **महीधर** (16वीं शताब्दी, वाजसनेयी संहिता पर 'वेददीप' टीका), **रावण** (मध्यकालीन टीकाकार)।

8. उत्तर (4):

व्याख्या: ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारः स्कन्दस्वामी अस्ति। स्कन्दस्वामीः वेदग्रन्थस्य व्याख्यानं कृतवान् यः ऋग्वेदस्य शास्त्रदृष्ट्या गूढार्थानि स्पष्टतया निरूपयामास। ऋग्वेद के सबसे प्राचीन भाष्यकार स्कन्दस्वामी (687 ई. पू.) हैं। इन्होंने ऋग्वेद के प्रथम चार अष्टकों पर आनन्दवृत्ति नामक भाष्य लिखा, जो वर्तमान में उपलब्ध सबसे पुरानी टीका है। इन्होंने वेदों की गूढ़ व्याख्या के लिए तात्त्विक व दार्शनिक दृष्टिकोण अपनाया। अन्य भाष्यकार जैसे उव्वट (11वीं शताब्दी, यजुर्वेद के मुख्य भाष्यकार), सायण (14वीं शताब्दी, प्रसिद्ध वेदभाष्यकार), वेङ्कटमाधवः (सायण के बाद का विद्वान) । स्कन्दस्वामी का योगदान वेदविद्या में अतुलनीय है।

9. उत्तर (3):

व्याख्या: माध्यन्दिनशाखायाः अपरनाम वाजसनेयीशाखा अस्ति। एषा शाखा यजुर्वेदे स्थितं अस्ति, यत्र वाजसनेयीशाखायाः मन्त्राः कृत्यकर्माणि विस्तरेण प्रतिपादितानि।

शुक्ल यजुर्वेद की दो प्रमुख शाखाएँ हैं—**माध्यन्दिन** (**वाजसनेयी**) और **काण्व**। माध्यन्दिन शाखा को वाजसनेयी शाखा भी कहते हैं, क्योंकि इसके प्रवर्तक ऋषि **याज्ञवल्क्य** (**वाजसनेय**) थे। कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ हैं—**तैत्तिरीय, मैत्रायणी, कठ** और **कपिष्ठल**। वाजसनेयी शाखा यज्ञों और कर्मकांड से जुड़े मंत्रों का संग्रह है, जिसका वैदिक अनुष्ठानों में विशेष महत्व है। अन्य शाखाएँ जैसे कैथुम और बौधायनी भी कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित हैं।

10. उत्तर (1):

व्याख्या: वाष्कलशाखा ऋग्वेदस्य विद्यते। एषा शाखा ऋग्वेदे स्थितं अस्ति, यत्र वाष्कलशाखायाः मन्त्राः कर्मकाण्डे तथा यज्ञविधीनि प्रतिपादितानि।

'वाष्कलशाखा' **ऋग्वेद** की एक प्रमुख शाखा है, जिसका नाम आचार्य **वाष्कल** पर आधारित है। पतंजलि ने ऋग्वेद की **21 शाखाएँ** मानी हैं, जिनमें वाष्कल एक प्रमुख शाखा है। यह शाखा ऋचाओं की व्याख्या व काव्य रूपांतरण के लिए जानी जाती है। वाष्कलशाखा ऋग्वेद की गूढ़ता को सरल करती है। **शाकल** और **वाष्कल** इसकी प्रसिद्ध शाखाएँ हैं। वर्तमान में वाष्कलशाखा लुप्तप्राय है।

11. उत्तर (1):

व्याख्या: ऋग्वेदे वरुणसूक्तस्य (1.2) ऋषिः शुनःशेपः अस्ति। शुनःशेपः एकः प्रसिद्धः ऋषि यः वरुणस्य मन्त्रानाम् उच्छारणे कर्ता आसीत्।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 25वें सूक्त को **वरुणसूक्त** कहा जाता है, जिसके ऋषि **शुनःशेप** हैं। इसमें 12 मंत्र हैं और वरुण देवता की स्तुति की गई है। शुनःशेप एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि थे, जिनका उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में भी है।

12. उत्तर (4):

व्याख्या: एषः मन्त्रः इन्द्रदेवस्य महिमा तथा शक्तिं व्यक्तयति, यः देवतां परित्राणे तथा रक्षायाम् समर्थः अस्ति। "यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् कतुना पर्यभूषत। यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य महास जनास इन्द्रः।।" मंत्र ऋग्वेद 2.12 के इन्द्रसूक्त का अंश है। इसमें इन्द्र देवता की स्तुति की गई है, जो देवताओं में प्रथम, शक्तिशाली और बुद्धिमान कहे गए हैं। इस सूक्त में इन्द्र की महाशक्ति, पराक्रम और असुरों पर विजय का वर्णन है। ऋषि गृत्समद हैं, छंद विष्टुप् है। इन्द्रसूक्त में इन्द्र की श्रेष्ठता, वीरता और उनकी ब्रह्मांडीय भूमिका दर्शाई गई है

13. उत्तर (4):

व्याख्या: इति मन्त्रांशो अथर्ववेदे विद्यते। एषः मन्त्रः ब्रह्मयज्ञस्य महत्त्वं, तपस्यां, तथा सत्यस्य स्थायित्वं दर्शयति।

"सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षातपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति। सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।" यह मंत्र **अथर्ववेद** के पृथिवीसूक्त (12.1) से है। इसमें छह गुण - **सत्य**, **ऋत** (नैतिक नियम), **दीक्षा**, **तप**, **ब्रह्मज्ञान** और **यज्ञ** पृथ्वी का आधार बताया गया है। यह मंत्र दर्शाता है कि धार्मिक और नैतिक मूल्य ही पृथ्वी के संतुलन और समाज के संरक्षण का आधार हैं। यह अथर्ववेद की गूढ़ दार्शनिक दृष्टि को प्रकट करता है।

14. उत्तर (2):

व्याख्या: दर्शयज्ञः अमावस्यां तिथौ क्रियते। एषा तिथि विशेषतः उपवासादि कर्माणि सम्पन्नानि, यः यज्ञः देवतायाः पूजायाम् उद्दिष्टः अस्ति।

दर्शयज्ञ अमावस्या तिथि को किया जाने वाला वैदिक यज्ञ है। यह यज्ञ प्रतिमाह अमावस्या (चंद्र के अदृश्य होने पर) अग्नि और इन्द्र को प्रसन्न करने हेतु होता है। दर्शयज्ञ और पौर्णमासयज्ञ

मिलकर 'दर्शपौर्णमास' कहलाते हैं। यजुर्वेद (तैत्तिरीय संहिता) व शतपथ ब्राह्मण में इसका वर्णन मिलता है। अमावस्या तिथि को आत्मशुद्धि और पुण्य हेतु यह यज्ञ विशेष महत्व रखता है। यह वैदिक मासिक अनुष्ठानों का हिस्सा है। प्रक्रिया - प्रथम दिन: उपवसथ (तैयारी) और द्वितीय दिन: यजनीय (मुख्य यज्ञ)

15. उत्तर (4):

व्याख्या: पञ्चमहायज्ञेषु विष्णुयज्ञः न गण्यते। पञ्चमहायज्ञाः देवयज्ञः, पितृयज्ञः, ब्रह्मयज्ञः, तथा आतिथेययज्ञः सन्ति, यः मनुष्यस्य धर्म पालनार्थं कृत्याः सन्ति।

पञ्चमहायज्ञों में विष्णुयज्ञ शामिल नहीं है। ये पाँच नित्य यज्ञ हिंदू धर्म के मूल कर्तव्य हैं:

1. **देवयज्ञ** (हवन) - देवताओं के लिए
2. **पितृयज्ञ** (तर्पण) - पूर्वजों के लिए
3. **ब्रह्मयज्ञ** (वेदपाठ) - ऋषियों के लिए
4. **मनुष्ययज्ञ** (अतिथि सत्कार) - मानवता के लिए
5. **भूतयज्ञ** (बलि/अन्नदान) - प्राणियों के लिए

विष्णुयज्ञ एक विशिष्ट वैष्णव अनुष्ठान है, जो पुराणिक काल में प्रचलित हुआ, जबकि पञ्चमहायज्ञ वैदिक संस्कार हैं। ये पाँच यज्ञ सृष्टि के सभी तत्वों के प्रति समर्पण दर्शाते हैं।

16. उत्तर (1):

व्याख्या: अत्र 'जिजीविषेत्' पदस्य अर्थः 'जीवितुमिच्छेत्' अस्ति। एषा वाक्ये कर्मकाण्डे निष्ठां प्रतिपादयति, यः जीवनस्य उद्देश्यम् इति।

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥" 'जिजीविषेत्' का अर्थ है "जीवित रहने की इच्छा करे"। यह शब्द ईशोपनिषद् के दूसरे मंत्र में आता है—"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः"। इसका भावार्थ है कि मनुष्य को निष्काम कर्म करते हुए सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। यह कर्मयोग का सिद्धांत प्रस्तुत करता है। 'जिजीविषेत्' शब्दका धातु: "**जीव्**" (जीवन) + इच्छार्थक "**सन्**" प्रत्यय, जो इच्छा दर्शाता है।

17. उत्तर (3):

व्याख्या: 'भवाति' रूपं लेट्लकारस्य विद्यते। लेट्लकारः भविष्यद्वचनं व्यक्तयति, यः क्रिया भविष्ये घटिष्यते इत्यर्थे उपयोगी अस्ति।

'भवाति' रूप लेट् लकार का है, जो वैदिक संस्कृत में प्रयुक्त होता है। यह लट् लकार से मिलता-जुलता है परंतु इसका प्रयोग इच्छा, संभावना या आर्ष भाव को व्यक्त करने हेतु होता है। 'भवाति' धातु 'भू' में लेट् प्रत्यय लगाकर बना है। ऋग्वेद जैसे वैदिक ग्रंथों में इसका प्रयोग मिलता है। आधुनिक संस्कृत में इसका प्रयोग नहीं होता। यह वैदिक व्याकरण की विशेषता को दर्शाता है।

18. उत्तर (2):

व्याख्या:'ऋक्प्रातिशाख्यानुसारं' समानाक्षराणां संख्या अष्टौ अस्ति। एषा संख्या प्रातिशाख्ये वर्णितं अस्ति, यत्र समानाक्षराणां संयोजनं अष्टकं रूपेण दत्तं।

ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार समानाक्षरों (स्वर संधि) की संख्या **आठ** होती है - **अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ**। ये स्वर समान ध्वनि वाले होते हैं और यह वैदिक उच्चारण विज्ञान का महत्वपूर्ण नियम है जो ऋग्वेद की शिक्षा पर आधारित है। प्रातिशाख्य ग्रंथों में वर्णित यह सिद्धांत वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण हेतु आवश्यक माना जाता है। इन आठ समान ध्वनियों के संयोग से ही वैदिक संस्कृत की विशिष्ट ध्वनि व्यवस्था बनती है।

19. उत्तर (1):

व्याख्या:'षड् भावविकारा भवन्ति' मतं वार्ष्यायणे विद्यते। वार्ष्यायणः संस्कृतज्ञः, यः वेदविषयक चिन्तनं कृतवान् अस्ति। तस्य मतानुसारं षड् भावविकारा व्याख्यायन्ते।

आचार्य वार्ष्यायण ने **छह भावविकार** का सिद्धांत प्रतिपादित किया है। ये छह मूल मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ हैं - **जायते** (उत्पन्न होना), **अस्ति** (विद्यमान रहना), **विपरिणमते** (परिवर्तित होना), **वर्धते** (बढ़ना), **अपक्षीयते** (घटना) और **विनश्यति** (नष्ट होना)। वार्ष्यायण ने इन भावविकारों को व्यक्ति की मानसिक व भौतिक अवस्था से जोड़ा है।

20. उत्तर (4):

व्याख्या: इति वाक्ये 'स्वतन्त्रस्वरितस्य' भेदो दर्शितं अस्ति। स्वतन्त्रस्वरितः स्वरः आत्मनियोज्यं, स्वतन्त्रतया उद्घोषितं अस्ति।

वैदिक स्वरित के दो प्रमुख भेद हैं - **स्वतंत्रस्वरित** और **अभिनिहितस्वरित**। अभिनिहितस्वरित में स्वरित स्वर पर अनुदात्त स्वर का आरोप होता है (जैसे 'अग्निमीळे' में 'ईळे' का उच्चारण), जबकि स्वतंत्रस्वरित शुद्ध स्वरित स्वर होता है। यह सूक्ष्म भेद वैदिक उच्चारण की विशेषता है जो मंत्रोच्चारण की शुद्धता के लिए आवश्यक है और पाणिनीय शिक्षा (28) में वर्णित है।

21. उत्तर (4):

व्याख्या: वेदान्तदर्शनानुसारं जगतः प्रपञ्चः विवर्तः कथ्यते। विवर्तः अर्थे परिवर्तनं, यः ईश्वरस्य आत्मस्वरूपेण परिवर्तनं कर्ता इति दर्शयति।

वेदांत दर्शन के अनुसार जगत् **'विवर्त'** (**ब्रह्म का आभासी रूपान्तर**) है। यह अद्वैत सिद्धांत बताता है कि रज्जु में सर्प के भ्रम की तरह, अज्ञानवश ब्रह्म ही जगत् के रूप में प्रतीत होता है, जबकि वास्तविकता में केवल ब्रह्म ही सत्य है। शंकराचार्य के "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" इसी विवर्तवाद को दर्शाता है, जहाँ